



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
The Tribune	03.08.2020	10	06-08

The long road ahead

DEEPENDER DESWAL

THE agriculture sector is not enthused by the *Atmanirbhar Bharat* slogan. Farmers feel that the government's insistence on their self-reliance is a climbdown on its promise of doubling their income.

"As far as foodgrain production is concerned, the peasantry in Haryana and Punjab is not only self-reliant but also contributes to the national food kitty in a big way. What we want is an improvement in our living standards," says Prabhu Ram, a farmer of Kirtan village in Hisar district who owns five acres. He says despite utilising the services of the entire family throughout the year, he is not able to earn enough to afford good schooling for his children or own a car. "After pouring blood and sweat into farming, we still don't have a decent lifestyle," he rues.

Dr Kuldeep Dhindsa, an agriculture expert, says the implementation of the recommendations of the Swaminathan Commission can put the farmers in a much better position and uplift the sector as a whole, adding that farmers should be given the minimum support price (MSP) for their produce.

Ramesh Kumar, a farmer of Bhiwani, says flawed policies like the recent ordinances issued in the name of agricultural reforms are ruining farmers. "These retrograde steps could prove counter-productive instead of making the sector self-reliant," he claims, adding that the attempt to introduce privatisation in the sector would spell doom for the farmers.

The Vice Chancellor of Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU), Prof Samar Singh, says the farm sector employs 55 per cent of the population and contributes 17 per cent to the GDP. "A great performance by the farmers of Haryana and Punjab ensured that the country became self-reliant in food production. However, the sharp deceleration of agriculture growth in both states is intriguing," he adds.

The VC says the state government's steps to provide irrigation facilities, all-

Stumbling block

Prabhu Ram, a farmer of Hisar's Kirtan village who owns five acres, says despite utilising services of his family throughout the year, he is not able to earn enough to afford good schooling for his kids or own a car. "After pouring blood and sweat into farming, we still don't have a decent lifestyle," he rues.

weather roads to provide rural connectivity and assured market for agricultural produce has helped the farmers. "The future of agricultural prosperity lies in the high-value sectors of agriculture. The state needs to promote crop diversification and encourage the food processing industry, besides micro irrigation technology and sectors such as livestock, fisheries and horticulture," he says, adding that paddy cultivation is leading to massive depletion of the water table.

Prof SS Punia, head of the Agronomy Department, HAU, says milk processing needs to be promoted aggressively by the state government. Although Haryana is among the toppers in 'per capita per day' availability of milk in the country, only 10 per cent of the total production of the state is processed by the organised sector (co-operatives and private players), which is very low compared to Gujarat (about 50 per cent).

"The government should provide incentives to the private sector to improve milk processing and set up several plants to process at least 30-35 per cent of the total production in the coming five years. Linking maize farmers with the dairy sector will help increase milk production through the supply of quality feed. But the abundance of liquid milk will put a downward pressure on its price. The government should incentivise the setting up of milk processing units; The state government can also make the rearing of cattle more profitable to farmers through its vibrant dairy sector, besides developing meat processing, especially of buffaloes, as an export-oriented industry," he says.



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	05.08.2020	02	03-05

एचएयू के कुलपति ने कहा-बेबीकॉर्न व स्वीटकॉर्न की आधुनिक खेती से विदेशी मुद्रा कमा सकते हैं किसान

भास्कर न्यूज़ | हिसार

प्रदेश में भूमिगत जलस्तर नीचे जा रहा है। इसका मुख्य कारण गेहूं-धान फसल चक्र का सही नहीं होना है, जिससे भूमिगत जल का अत्याधिक दोहन हुआ है, जोकि भविष्य में गहरे संकट की ओर इशारा है। इसके समाधान के लिए फसल चक्र में बदलाव जरूरी है। इस समस्या के मद्देनजर एचएयू के कुलपति प्रो. समर सिंह ने किसानों को सलाह दी कि मक्का इस फसल चक्र में विशेष योगदान दे

सकता है। उन्होंने बताया कि मक्का कई प्रकार का होता है, जिसमें साधारण मक्का, उच्च गुणवत्ता मक्का और बेबीकॉर्न व स्वीटकॉर्न। साधारण मक्का की तुलना में बेबीकॉर्न व स्वीटकॉर्न कम समय में तैयार हो जाती है और इससे किसान अधिक मुनाफा कमा सकते हैं। साथ ही इसको विदेश में निर्यात करके विदेशी मुद्रा भी कमा सकते हैं। कुलपति के अनुसार बेबीकॉर्न की उपज, किस्मों की क्षमता व मौसम पर निर्भर करती है। बेबीकॉर्न की काश्त करने पर प्रति एकड़ किसान 6-7

क्विंटल बेबीकॉर्न व 80-100 क्विंटल प्रति एकड़ हरा-चारा लिया जा सकता है। इसलिए यह फसल विविधिकरण फसल चक्र में बदलाव व पशुपालन व्यवसाय में काफी लाभदायक हो सकता है। अनुसंधान निदेशक डॉ. एस्के सहरावत ने बताया कि किसान बेबीकॉर्न की खेती दिसंबर व जनवरी माह को छोड़कर पूरे साल कर सकते हैं। इसकी बिजाई 20 जून से लेकर 15 सितम्बर, 25 अक्टूबर से 20 नवम्बर, 25 जनवरी से फरवरी के अंत तक की जा सकती है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	05.08.2020	09	03-08

कम समय में ज्यादा मुनाफा देती हैं ये फसलें : प्रो. समर सिंह

स्वीटकॉर्न की खेती से विदेशी मुद्रा कमा सकते हैं किसान

- फसल चक्र में बदलाव आवश्यक है
- मक्का इस फसल चक्र में विशेष योगदान दे सकता है

हरिगुमि न्यूज | हिसार



प्रदेश में भूमिगत जलस्तर निरंतर नीचे जा रहा है। इसका मुख्य कारण गेहूँ-धान फसल चक्र है, जिससे भूमिगत जल का अत्यधिक दोहन हुआ है, जो भविष्य में गहरे संकट की ओर इशारा है। इसके समाधान के लिए फसल चक्र में बदलाव आवश्यक है।

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने किसानों को सलाह दी कि मक्का

इस फसल चक्र में विशेष योगदान दे सकता है। उन्होंने बताया कि मक्का कई प्रकार का होता है, जिसमें साधारण मक्का, उच्च गुणवत्ता मक्का और बेबीकॉर्न व स्वीटकॉर्न। साधारण मक्का की तुलना में बेबीकॉर्न व स्वीटकॉर्न कम समय में तैयार हो जाती है और इससे किसान अधिक मुनाफा कमा सकते हैं। साथ ही इसका विदेशों में निर्यात करके विदेशी मुद्रा भी कमा सकते हैं।

कुलपति के अनुसार बेबीकॉर्न की उपज, किस्मों की क्षमता व मौसम पर निर्भर करती है। बेबीकॉर्न की काश्त करने पर प्रति एकड़ किसान 6-7 क्विंटल बेबीकॉर्न व 80-100 क्विंटल प्रति एकड़ हरा-चारा लिया जा सकता है। इसलिए यह फसल विविधिकरण फसल चक्र में बदलाव व पशुपालन व्यवसाय में काफी लाभदायक हो सकता है।

ये बनते हैं मुख्य व्यंजन

बेबीकॉर्न का प्रयोग दोनों प्रकार से कच्ची व पकाकर किया जा सकता है। इसका उपयोग मुख्यतः 30-40 व्यंजन के रूप में किया जा सकता है। इनमें सब्जी, सलाद, मुरब्बा, सूप, घंटनी, टिक्की, अचार, कौफता, हलावा, बर्फी, जैम, लड्डू, गुजिया, खीर, सेंस, कटलेट, चट, नन्कुरियन, पौज, सैंडविच, चड़ा, उप्पमा, आमलेट, विल्ला, कॉर्न उरुपम, सांभर, फूरटक्रम, बेबीकॉर्न पुलाव इत्यादि शामिल हैं। साधारण मक्का में चीनी की मात्रा लगभग 3 प्रतिशत होती है जबकि स्वीटकॉर्न में यह लगभग 7 प्रतिशत या इससे अधिक होती है। दाले के ऊपर का छिलका बहुत ही नरम होने की वजह से स्वीटकॉर्न बहुत ही स्वादिष्ट होती है। स्वीटकॉर्न को कच्चा, सूज कर या उबाल कर खया जा सकता है। यह सब्जी, सूप एवं अनेक पकवान जैसे स्वीटकॉर्न मिल्क, केक, क्रैम, पिज्जा आदि उत्पाद बनाने में उपयोग होता है। इसकी हरी छत्ती तोड़ने के बाद पौधे को काट कर हरे चारे के रूप में प्रयोग में लाया जा सकता है।

दिसंबर व जनवरी को छोड़कर पूरे साल खेती कर सकते हैं किसान

अनुसंधान विदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि किसान बेबीकॉर्न की खेती दिसंबर व जनवरी माह को छोड़कर पूरे साल कर सकते हैं। इसकी बिजाई 20 जून से लेकर 15 सितम्बर, 25 अक्टूबर से 20 नवम्बर, 25 जनवरी से फरवरी के अंत तक की जा सकती है। इसलिए यह फसल विविधिकरण, फसल चक्र में बदलाव व पशुपालन व्यवसाय में काफी लाभदायक सिद्ध हो सकती है। यह फसल कम समय में अच्छा मुनाफा देती है। उन्होंने सलाह दी कि किसान ग्रामीण क्षेत्र में इसके प्रसंस्करण उद्योग लगाकर अपनी आय सुनिश्चित कर सकते हैं और विदेशों में निर्यात करके विदेशी मुद्रा भी कमा सकते हैं। डॉ. मेहरचंद कंबोज के अनुसार किसान बेबीकॉर्न की संकर किस्में एच.एम. 4 व अन्य जल्दी पकने वाली संकर किस्में अच्छी रखती हैं। वर्ष में बेबीकॉर्न की 3-4 फसलें ली जा सकती हैं।





चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	05.08.2020	03	06-07

बेबीकॉर्न व स्वीटकॉर्न की आधुनिक खेती से कमा सकते हैं विदेशी मुद्रा : कुलपति

■ कम समय में ज्यादा मुनाफा देती हैं ये फसलें

हिसार, 4 अगस्त (ब्यूरो) : प्रदेश में भूमिगत जलस्तर निरंतर नीचे जा रहा है। इसका मुख्य कारण गेहूं-धान फसल चक्र है, जिससे भूमिगत जल का अत्यधिक दोहन हुआ है, जो भविष्य में गहरे संकट की ओर इशारा है। इसके समाधान के लिए फसल चक्र में बदलाव आवश्यक है। उपरोक्त समस्या के मद्देनजर चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने किसानों को सलाह दी कि मक्का इस फसल चक्र में विशेष योगदान दे सकता है। उन्होंने बताया कि मक्का कई प्रकार का होता है, जिसमें साधारण मक्का, उच्च गुणवत्ता मक्का, बेबीकॉर्न व स्वीटकॉर्न। साधारण मक्का की तुलना में बेबीकॉर्न व स्वीटकॉर्न कम समय में तैयार हो जाती हैं और इससे किसान अधिक मुनाफा कमा सकते हैं। साथ ही इसको विदेशों में निर्यात करके विदेशी मुद्रा भी कमा सकते हैं।

कुलपति के अनुसार बेबीकॉर्न की उपज, किस्मों की क्षमता व मौसम पर निर्भर करती है। बेबीकॉर्न की काश्त करने पर प्रति एकड़ किसान 6-7 क्विंटल बेबीकॉर्न व 80-100 क्विंटल प्रति एकड़ हरा-चारा लिया जा सकता है। इसलिए यह फसल विविधिकरण फसल चक्र



में बदलाव व पशुपालन व्यवसाय में काफी लाभदायक हो सकता है।

दिसम्बर व जनवरी को छोड़कर पूरे साल खेती कर सकते हैं किसान

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि किसान बेबीकॉर्न की खेती दिसम्बर व जनवरी माह को छोड़कर पूरे साल कर सकते हैं। इसकी बिजाई 20 जून से लेकर 15 सितम्बर, 25 अक्टूबर से 20 नवम्बर, 25 जनवरी से फरवरी के अंत तक की जा सकती है। इसलिए यह फसल विविधिकरण, फसल चक्र में बदलाव व पशुपालन व्यवसाय में काफी लाभदायक सिद्ध हो सकती है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	04.08.2020	--	--

बेबीकॉर्न व स्वीटकॉर्न की आधुनिक खेती से विदेशी मुद्रा कमा सकते

पांच बजे न्यूज

हिसार। प्रदेश में भूमिगत जलस्तर निरंतर नीचे जा रहा है। इसका मुख्य कारण गेहूँ-धान फसल चक्र है, जिससे भूमिगत जल का अत्यधिक दोहन हुआ है, जो भविष्य में गहरे संकट की ओर इशारा है। इसके समाधान के लिए फसल चक्र में बदलाव आवश्यक है। उपरोक्त समस्या के मद्देनजर चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय प्रोफेसर स्मर सिंह ने किसानों को सलाह दी कि मक्का इस फसल चक्र में विशेष योगदान दे सकता है। उन्होंने बताया कि मक्का कई प्रकार का होता है, जिसमें साधारण मक्का, उच्च

गुणवत्ता मक्का और बेबीकॉर्न व स्वीटकॉर्न। साधारण मक्का की तुलना में बेबीकॉर्न व स्वीटकॉर्न कम समय में तैयार हो जाती है और इससे किसान अधिक मुनाफा कमा सकते हैं। साथ ही इसको विदेशों में निर्यात करके विदेशी मुद्रा भी कमा सकते हैं। कुलपति महोदय के अनुसार बेबीकॉर्न की उपज, किस्मों की क्षमता व मौसम पर निर्भर करती है। बेबीकॉर्न की काश्त करने पर प्रति एकड़ किसान 6-7 क्विंटल बेबीकॉर्न व 80-100 क्विंटल प्रति एकड़ हर-चारा लिया जा सकता है। इसलिए यह फसल विविधिकरण फसल चक्र में बदलाव व पशुपालन व्यवसाय में काफी लाभदायक हो सकता है।

दिसंबर व जनवरी को छोड़कर पूरे साल खेती कर सकते हैं किसान अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि किसान बेबीकॉर्न की खेती दिसंबर व जनवरी माह को छोड़कर पूरे साल कर सकते हैं। इसकी बिजाई 20 जून से लेकर 15 सितम्बर, 25 अक्तूबर से 20 नवम्बर, 25 जनवरी से फरवरी के अंत तक की जा सकती है। इसलिए यह फसल विविधिकरण, फसल चक्र में बदलाव व पशुपालन व्यवसाय में काफी लाभदायक सिद्ध हो सकती है। यह फसल कम समय में अच्छा मुनाफा देती है। उन्होंने सलाह दी कि किसान ग्रामीण क्षेत्र में इसके प्रसंस्करण उद्योग लगाकर अपनी आय सुनिश्चित कर

सकते हैं और विदेशों में निर्यात करके विदेशी मुद्रा भी कमा सकते हैं। कीटनाशकों के प्रभाव से होती है मुक्त उन्होंने बताया कि दाना बनने से पहले भूट्टे को बेबीकॉर्न या शिशु मक्का कहा जाता है। इसकी लंबाई 7-10 सें.मी. व रंग क्रीमी होता है। बेबीकॉर्न आसानी से पचाई जा सकती है। पत्तों में लिपटी होने के कारण यह कीटनाशक दवाइयों के प्रभाव से मुक्त होती है। इसमें फॉस्फोरस, प्रोटीन, कैल्शियम, लोहा व विटामिन भी पाए जाते हैं। संकर किस्मों से वर्ष में ले सकते हैं तीन से चार फसलें डॉ. मेहरचंद कंबोज के अनुसार किसान बेबीकॉर्न की संकर किस्में एच.एम. 4 व अन्य

जल्दी पकने वाली संकर किस्में अच्छी र हैं। वर्ष में बेबीकॉर्न की 3-4 फसलें ली सकती हैं। इसकी बिजाई मेंढों पर या लाइनों करनी चाहिए। मेंढ से मेंढ की दूरी 60 सें. व पौधे से पौधे की दूरी 15 सें.मी. हो चाहिए। इसके अलावा इसकी फसल में स के रूप में डी.ए.पी. 52 किलोग्राम, यूरिया 110 किलोग्राम, एम.ओ.पी. 40 किलोग्राम जिंक सल्फेट 10 (कि.ग्रा./एकड़) उपयु रहती है। डी.ए.पी. व एम.ओ.पी. की पूरी मात्रा व यूरिया का एक तिहाई भाग खेत की तैय के समय तथा एक तिहाई भाग फसल घुटनों की ऊंचाई के समय तथा शेष तिहाई भाग फसल के झंडे आने की अव में दें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	04.08.2020	--	--

किसानों के लिए बेबीकॉर्न की खेती अत्यंत लाभदायक : कुलपति

हिसार/04 अगस्त/रिपोर्टर

प्रदेश में भूमिगत जलस्तर निरंतर नीचे जा रहा है। इसका मुख्य कारण गेहूँ धान फसल चक्र है जिससे भूमिगत जल का अत्यधिक दोहन हुआ है, जो भविष्य में गहरे संकट को और इतारा है। इसके समाधान के लिए फसल चक्र में बदलाव आवश्यक है। उपरोक्त समस्या के मद्देनजर श्रीमती चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने किसानों की सलाह दी कि मक्का इस फसल चक्र में विशेष योगदान दे सकता है। उन्होंने बताया कि मक्का कई प्रकार का होता है, जिसमें साधारण मक्का उष्ण गुणवत्ता मक्का और बेबीकॉर्न व स्वीटकॉर्न। साधारण मक्का की तुलना में बेबीकॉर्न व स्वीटकॉर्न कम समय में तैयार हो जाती है और इससे किसान अधिक मुनाफा कमा सकते हैं। साथ ही इसकी विदेशों में निर्यात करके विदेशी मुद्रा भी कमा सकते हैं। कुलपति के अनुसार बेबीकॉर्न की उपज किसानों की क्षमता व

मौसम पर निर्भर करती है। बेबीकॉर्न की कटाव करने पर प्रति एकड़ किसान 6.7 क्विंटल बेबीकॉर्न व 80.100 क्विंटल प्रति एकड़ हरा, चारा लिया जा सकता है। इसलिए यह फसल विविधिकरण फसल चक्र में बदलाव व परंपरागत व्यवसाय में काफी लाभदायक हो सकता है।

अनुसंधान निदेशक डॉ. एचके सहजपाव ने बताया कि किसान बेबीकॉर्न की खेती दिसंबर व जनवरी माह को छोड़कर पूरे साल कर सकते हैं। इसकी विचाई 20 जून से लेकर 15 सितम्बर, 25 अक्टूबर से 20 नवम्बर, 25 जनवरी से फरवरी के अंत तक की जा सकती है। इसलिए यह फसल विविधिकरण, फसल चक्र में बदलाव व परंपरागत व्यवसाय में काफी लाभदायक सिद्ध हो सकती है। यह फसल कम समय में अच्छा मुनाफा देती है। उन्होंने सलाह दी कि किसान ग्रामीण क्षेत्र में इसके प्रसंस्करण उद्योग लगाकर अपनी आय सुनिश्चित कर सकते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नित्य शक्ति टाइम्स	04.08.2020	--	--

जल का अत्याधिक दोहन संकट की ओर इशारा : वीसी



हकूवि कुलपति प्रो. समर सिंह बोले, बेबीकॉर्न व स्वीटकॉर्न की आधुनिक खेती से विदेशी मुद्रा कमा सकते हैं किसान

नित्य शक्ति टाइम्स न्यूज हिसार। प्रदेश में भूमिगत जलस्तर निरंतर नीचे जा रहा है। इसका मुख्य कारण गेहूँ-धान फसल चक्र है, जिससे भूमिगत जल का अत्याधिक दोहन हुआ है, जो भविष्य में गहरे संकट की ओर इशारा है। इसके समाधान के लिए फसल चक्र में बदलाव आवश्यक है। उपरोक्त समस्या के मद्देनजर चौधरी चरण सिंह



हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने किसानों को सलाह दी कि मक्का इस फसल चक्र में विशेष योगदान दे सकता है। उन्होंने बताया कि मक्का कई प्रकार का होता है, जिसमें साधारण मक्का, उच्च गुणवत्ता मक्का और बेबीकॉर्न व स्वीटकॉर्न। साधारण मक्का की तुलना में बेबीकॉर्न व स्वीटकॉर्न कम समय में तैयार हो जाती है और इससे किसान अधिक मुनाफा कमा सकते हैं। साथ ही इसको विदेशों में निर्यात करके

विदेशी मुद्रा भी कमा सकते हैं। कुलपति महोदय के अनुसार बेबीकॉर्न की उपज, किस्मों की क्षमता व मौसम पर निर्भर करती है। बेबीकॉर्न की काशत करने पर प्रति एकड़ किसान 6-7 क्विंटल बेबीकॉर्न व 80-100 क्विंटल प्रति एकड़ हरा-चारा लिया जा सकता है। इसलिए यह फसल विविधिकरण फसल चक्र में बदलाव व पशुपालन व्यवसाय में काफी लाभदायक हो सकता है।

दिसंबर व जनवरी को छोड़कर पूरे साल खेती कर सकते हैं किसान

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि किसान बेबीकॉर्न की खेती दिसंबर व जनवरी माह को छोड़कर पूरे साल कर सकते हैं। इसकी बिजाई 20

जून से लेकर 15 सितम्बर, 25 अक्टूबर से 20 नवम्बर, 25 जनवरी से फरवरी के अंत तक की जा सकती है। इसलिए यह फसल विविधिकरण, फसल चक्र में बदलाव व पशुपालन व्यवसाय में काफी लाभदायक सिद्ध हो सकती है। यह फसल कम समय में अच्छा मुनाफा देती है। उन्होंने सलाह दी कि किसान ग्रामीण क्षेत्र में इसके प्रसंस्करण उद्योग लगाकर अपनी आय सुनिश्चित कर सकते हैं और विदेशों में निर्यात करके विदेशी मुद्रा भी कमा सकते हैं।

कीटनाशकों के प्रभाव से होती है मुक्त

उन्होंने बताया कि दाना बनने से पहले भुट्टे को बेबीकॉर्न या शिशु मक्का कहा जाता है। इसकी लंबाई 7-10 सें.मी. व

रंग क्रीमी होता है। बेबीकॉर्न आसानी से पचाई जा सकती है। पत्तों में लिपटी होने के कारण यह कीटनाशक दवाइयों के प्रभाव से मुक्त होती है। इसमें फॉस्फोरस, प्रोटीन, कैल्शियम, लोहा पाए जाते हैं।

संकर किस्मों से वर्ष में ले सकते हैं तीन से चार फसलें

डॉ. मेहरचंद कंबोज के अनुसार किसान बेबीकॉर्न की संकर किस्में एच.एम. 4 व अन्य जल्दी पकने वाली संकर किस्में अच्छी रहती हैं। वर्ष में बेबीकॉर्न की 3-4 फसलें ली जा सकती हैं। डॉ. धर्मवीर यादव ने बताया कि बेबीकॉर्न की काशत के लिए प्रति एकड़ 10 से 12 किलोग्राम बोज की जरूरत होती है। बेबीकॉर्न की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए नरमजरी (झण्डे) निकालना बहुत जरूरी है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाइन (जुलम से जंग)	01.08.2020	--	--

किस्मों के प्रमाणित बीज तैयार करें वैज्ञानिक: कुलपति प्रोफेसर समर सिंह

Published on August 1, 2020 by Admin | <https://haryanaagriculture.com/Chaudhary>

हिसार, राजेश अग्रवाल: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों से कहा कि वे रही व अतीत नैसर्ग के लिए फसलों के गुणवत्ता सुझा अधिक उत्पादन हेतु नई किस्म के बीज तैयार करें। प्रोफेसर समर सिंह ने यह आग्रह विश्वविद्यालय के उपकुलपति फार्म व उपकरण विभाग बीज फार्म सहित विभिन्न क्षेत्रों का दौरा करती हुए वैज्ञानिकों से किया। नैसर्गिक है कि कुलपति प्रोफेसर समर सिंह विश्वविद्यालय में खरी रहे विभिन्न फसलों का उत्पादन करीबी से जांचना ले रहे हैं और उनमें से बेहतर अधिकारियों को उनके निर्धारित समय में पूरा करने के लिए दिशा निर्दिष्ट कर रहे हैं। प्रोफेसर समर सिंह ने इस दौरान सभी उपस्थित अधिकारियों को निर्देश दिया कि कोरोना-19 महामारी के फसल उत्पादन बाधा रही तरीके से उपकरण करते हुए फसल पर निरीक्षण की कार्यवाही की जाती रहित। उपकुलपति फार्म के अवलोकन के दौरान उन्होंने फार्म निदेशक डॉ. एच.के. बलराज को दिशा निर्देश देते हुए कहा कि वे इस फार्म को एक नैसर्ग के रूप में विकसित किया जा रहा रहित। तदनुसार फसलों को प्रोफेसर अधिक से अधिक लाभ मिल सकें। उन्होंने कहा कि फार्म की उत्पादन भूमि का समुचित उपयोग किया जा रहा रहित और सभी हुए भूमि में अन्य कृषि फसलों को बीज तैयार कर लिए जा सकें। फसल उत्पादन का उचित उपयोग हो सकें। उन्होंने कहा कि रही व अतीत नैसर्ग में फसल बाधा की समस्या रहित निवारण भूमि की उत्पादन सहित करी रहती है। समर सिंह बीज फार्म के दौर के दौरान उन्होंने कृषि वैज्ञानिकों को किसान प्रोत्साहन अनुसंधान पर अधिक ध्यान देने की सलाह दी। बीज फार्म के निदेशक डॉ. के.डी.समर्थ ने विश्वविद्यालय में आधुनिक तकनीकों से बीज तैयार करने सहित कृषि वैज्ञानिकों से उच्च कार्यवाही के प्रोफेसर जाने व उनसे अधिकतर लाभ उठाने की सलाह प्रोत्साहित किया। साथ ही उन्होंने की सभी वैज्ञानिक, मार्केटिंग, डिस्ट्रिबूटन व समन्वयी भंडारण पर भी और दिया।

2014 सेक्टर में फैला है उपकुलपति फार्म
उपकुलपति फार्म के निदेशक डॉ. एच.के. बलराज ने कुलपति प्रोफेसर समर सिंह को बताया कि यह फार्म 274 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ है जिसमें मौसुदा समय में सबसे ऊपर में 75 हेक्टेयर में गन्ना, 58 हेक्टेयर में मूंग, 112 हेक्टेयर में कपास व 1 हेक्टेयर में खटार की गई किस्म एच.जे. 54-1 का बीज उत्पादन किया हुआ है। इसके साथ 20 हेक्टेयर में टैपे का बीज उत्पादन किया हुआ है जिसे फसल बाधा के अनुभव बीज बाधा है। उन्होंने बताया कि इसके अलावा 120 हेक्टेयर में टैपे की इरी खटार के लिए बीज बाधा है। फार्म पर तैयार गया बीज उपकरणों से बाधा

फार्म के निदेशक डॉ. एच.के. बलराज ने प्रोफेसर समर सिंह को बताया कि बाधा ही फार्म पर यह बीज उपकरणों से बाधा रही यह में स्थापित किया जाने की संभावना है। इसके अलावा फार्म पर सीसीटीवी कैमरा भी लगाने की योजना है। प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि फार्म पर डिजिटल फार्मिंग का बीज तैयार कर किस्मों की जांचना करने की आवश्यकता है। इसके लिए आधुनिक युवा तकनीक व वैज्ञानिकों को बाधा देना रहित। इसके अलावा उन्होंने फार्म पर मशीनरीकरण की बाधा देने व विभिन्न फसलों में नुस्ते खानपानों के उचित प्रबंधन की सलाह दी। उन्होंने कहा कि खानपानों की का आधुनिक प्रयोग फसल उत्पादन की बाधा की बाधा देना है। इसलिए सभी प्रबंधन से ही प्रोफेसर प्रयोग किया जा रहा रहित। उन्होंने बताया की फसल की तरह मगर की फसल की भी किस्मों करने की सलाह दी जाकि निर्मा-मुद्राई करने में आवश्यक हो और इसके लिए फसल तैयार हो प्रोफेसर निर्मा-मुद्राई की का बाधा। प्रोफेसर समर सिंह ने कृषि वैज्ञानिकों को बताया कि उन्होंने फार्म में की बीजों में फसल के फसल की दुर्ग 60 से 90 और 90 से 120 सेंटीमीटर अंतराल देकर रहित समर पंच द्वारा खानपानों की का इरी खानपान है किस्मों खानपानों का उचित नियंत्रण संभव हो बाधा है।

उचित खानपान के लिए दिए आदेश
कुलपति महोदय ने विश्वविद्यालय के फार्म क्षेत्र का दौरा करती हुए उचित खानपान के लिए फसलों के खरी दुर्गों की समस्या करवाने की आवश्यकता करने के लिए भी निर्दिष्ट किया। अपने विश्वविद्यालय के भ्रमण के दौरान उन्होंने फार्म में स्थापित आधुनिक तकनीकी बीज तैयार कर भी निर्दिष्ट किया और बीज तैयार के दुर्गों डॉ. सोमवीर ने इसकी विस्तृत जानकारी प्रोफेसर समर सिंह को दिया। प्रोफेसर समर सिंह को इस बारे में बताया कि आधुनिकीकरण व बीज उत्पादन विभाग के अलावा इस बीज तैयार की सलाह की गई है तथा बाधा की सलाह के अनुसार भूमि में बीज उत्पादन हेतु लगभग 20 फसलों के 1800 से अधिक उपकरणों फसल लिए हैं और इसे लगभग 100 से 120 सेंटीमीटर अंतराल देकर रहित समर पंच पर करी किया गया है। इसके बाद फसल बीज तैयार का दौरा कर फसल किया कि 25 एकड़ में टैपे खानपान पर बीज फार्म बाधा है। एक एकड़ में दिए निर्माई फसलों द्वारा भी खानपान पर बीज फार्म पर रहा है। इस दौरान उनके साथ अनुसंधान निदेशक डॉ. एच.के. बलराज, समर सिंह बीज फार्म के निदेशक डॉ. के.डी.समर्थ, एससीसी फार्म सुपर फार्म सहित अन्य अधिकारी मौजूद थे।





चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
ऑनलाइन (जुलम से जंग)	04.08.2020	--	--

विश्व मित्रता दिवस पर एक-दूसरे की मदद का संकल्प लें विद्यार्थी

Posted on August 4, 2020 by Admin (<https://julmsejung.com/?author=1>) |

हिसार, राजेन्द्र अग्रवाल: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण निदेशालय द्वारा 'विश्व मित्रता दिवस' पर ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने विश्वविद्यालय के सभी विद्यार्थियों से सोहार्द भावना को बनाए रखने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि हमें 'विश्व मित्रता दिवस' पर संकल्प लेना चाहिए कि हम जरूरत पड़ने पर एक-दूसरे की मदद कर सकें। इसके अलावा ऐसे मैत्रीपूर्ण संबंध विकसित करने चाहिए जो भविष्य में भी काम आ सकें। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को इन मित्रतापूर्वक संबंधों को एक परिवार के रूप में भी विकसित करना चाहिए ताकि भविष्य में हमारा एक अच्छा सामाजिक दायरा बन सके। छात्र कल्याण निदेशालय के निदेशक डॉ. देवेन्द्र सिंह दहिया ने बताया कि इस ऑनलाइन प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के 5 महाविद्यालयों के 21 छात्र व 21 छात्राओं सहित कुल 42 प्रतिभागियों ने भाग लिया। ऑनलाइन प्रतियोगिता में कुल 10 प्रश्न पूछे गए जिसके लिए 10 मिनट का समय निर्धारित किया गया था। प्रतियोगिता में प्रथम एवं द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों ने सभी प्रश्नों के उत्तर सही दिए लेकिन प्रतियोगिता के परिणाम निर्धारित समयावधि के अनुसार तय किए गए। उन्होंने बताया कि कृषि महाविद्यालय हिसार के अक्षय महता ने सबसे कम समय 7 मिनट 34 सेकंड में सभी प्रश्नों के सही उत्तर देकर प्रथम स्थान प्राप्त किया जबकि सचिन गर्ग ने 9 मिनट 38 सेकंड का समय लेकर द्वितीय व कृषि महाविद्यालय (कौल) कैथल की छात्रा रीतिका ने 9 मिनट 48 सेकंड का समय लेकर तृतीय स्थान हासिल किया। इस ऑनलाइन प्रतियोगिता का आयोजन छात्र कल्याण निदेशालय की 'लिटरेरी एंड डिबेटिंग सोसायटी' की अध्यक्ष डॉ. अपर्णा की देखरेख में हुआ। सोसायटी के उपाध्यक्ष डॉ. देवव्रत ने बतौर निर्णायक की भूमिका निभाते हुए परिणामों का मूल्यांकन किया। छात्र कल्याण निदेशक ने बताया कि सोसायटी के सचिव डॉ. राजेश कंधवाल और सदस्य डॉ. विरेन्द्र दलाल ने पंजीकरण व गूगल फार्म तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगियों से विद्यार्थियों में सकारात्मक प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न होती है और उनका आत्मविश्वास बढ़ता है। डॉ. देवेन्द्र सिंह दहिया ने कहा कि विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए।

